

---

# Shri Mahashasta Ashtakam

श्रीमहाशास्ताष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Mahashasta Ashtakam

File name : mahAshAstAShTakam.itx

Category : deities\_misc, ayyappa, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : October 11, 2022

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Mahashasta Ashtakam

---

## श्रीमहाशास्ताष्टकम्

---



गङ्गेन्द्रशार्दूल मृगेन्द्रवाहनं

मुनीन्द्रसंसेवित पादपङ्कजम् ।

द्वेवीद्वयेनावृत पार्श्वयुगलं

शास्तारमाद्यं सततं नमामि ॥ १ ॥

उरिउरभवमेकं सख्यिदानन्दरूपं

भवभवउरपादं भावनागम्यमूर्तिम् ।

सकलभुवनहेतुं सत्यधर्मानुकूलं

श्रितजनकुलपालं धर्मशास्तारमीडे ॥ २ ॥

उरिउरसुतमीशं वीरवर्यं सुरेशं

कलियुगभवामीतिध्वंसलीलावतारम् ।

जयविजयलक्ष्मी सुसंस्तुताजानुभाळुं

मलयगिरिनिवासं धर्मशास्तारमीडे ॥ ३ ॥

परशिवमयमीड्यं भूतनाथं मुनीन्द्रं

करधृतविक्रयाब्जं ब्रह्मपञ्चस्वरूपम् ।

मणिमयसुकिरीटं मल्लिकापुष्पहारं

वरवितरणशीलं धर्मशास्तारमीडे ॥ ४ ॥

उरिउरमयमाय बिम्बमादित्यकोटि

त्विषममलमुष्पेन्दुं सत्यसन्धं वरेण्यम् ।

उपनिषदविभाव्यं ओंतिध्यानगम्यं

मुनिजनहृदि चिन्त्यं धर्मशास्तारमीडे ॥ ५ ॥

कनकमय द्रुकूलं चन्दनार्द्रावसिक्तं

सरसमृदुलडासं ब्राह्मणानन्दकारम् ।

मधुरसमयपाणिं मारुजुवातुलीलं

सकलदुरितनाशं धर्मशास्तारमीडे ॥ ६ ॥

मुनिजनगाणसेव्यं मुक्तिसाम्राज्यमूलं  
विदितसकलतत्त्वज्ञानमन्त्रोपदेशम् ।  
छन्दपरकृलछेतुं तारकं ब्रह्मसंज्ञं  
षडशिमलविनाशं धर्मशास्तारमीडे ॥ ७ ॥

मधुरसकृलमुष्यैः पायसैर्भक्ष्यजालैः  
दधिघृत परिपूर्णेन्द्रदानैस्सन्तुष्टम् ।  
निजपदनमितानां नित्यवात्सल्यभावं  
दृष्टयकमलमध्ये धर्मशास्तारमीडे ॥ ८ ॥

भवगुणजनितानां भोगभोक्षाय नित्यं  
उरिउरभवदेवस्याष्टकं सन्निधौ यः ।  
पठति सकलभोगान् मुक्तिसाम्राज्यभाष्ये  
सुविदिवि? य तस्मै नित्यतुष्टो ददाति ॥ ९ ॥  
इति श्रीमडाशास्ताष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Mohan Chettoor

---

—  
*Shri Mahashasta Ashtakam*

pdf was typeset on September 16, 2023

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

